

अति-ही-व्ही-री-कूभी-कमाध्यातां पुड्-गी।  
स्वापमति ।

तिष्ठतेरित् ।

उपधाया इहादेशः स्थाच्यत्परं जी। अतिष्ठित् ।  
पर चेष्यामम् ।

चड् - परक 'णि' परे होने पर

'स्वा। धातु की उपधा के स्थान पर इस्व  
इकार आदेश होता है। उदाहरण के लिए  
पुड् लकार के प्रथम पुरुष - एकवचन में 'स्वा।  
धातु के मित्, पुड्, चि-चड् अडागम आदि  
इकार 'अ' स्वाप् इ अ ता रूप बनाता है।  
यह चड् - परक 'णि' इ अ परे होने के कारण प्रकृत

रूप में 'स्वाप्' की उपधा - आकार के स्थान पर  
इकार होकर 'अ' स्व इ पु इ अ ता = अ।स्विप्  
इ अत्' रूप बनाता है। इस।स्विति में।स्विप्  
और डिल्व, अणाय-कार्य, अणाय के लकार  
को पर-तकार और पल्व तथा सुल्व आदि इकार  
( अतिष्ठित् ) रूप धिदु होता है।

मितां इस्वः ।

धरादीनां शपादीनां च उपधाया इस्वः स्थापणी।  
परपाति । शप शाने शपने च। शपपाति ।  
अजिशपत् ।

अञ्जनगमां सानि ।

अजन्तानां हुनैरजादेशगमेश्च हीर्षो कलाहो सानि ।

इको कल ।

इगन्ताज्जलादिः सन् कित् स्थात् । ऋत इहातोः ।

कर्तुमिच्छति चिकीर्षति ।

सानि शृष्ट-शुद्धीर्थं ।

शृष्टशुद्धीरुगन्ताच्च सन् इणं न स्थात् । वृक्षवति ।

*[Faint handwritten notes and bleed-through from the reverse side of the page.]*

*[Faint handwritten notes and bleed-through from the reverse side of the page.]*